International Journal of Professional Development
Vol.10, No.1,Jan-June 2021 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor : 3.017(IFSIJ)

सिख धर्म के मुख्य ग्रंथों का अध्ययन

कमल राना
एम.ए. इतिहास, यूजीसी नैट
गाँव नाचरॉन, रादौर (यमुनानगर)

सार

सिख धर्म को सिखमत और सिखी भी कहा जाता है। सिख धर्म एक एकेश्वरवादी धर्म है। सिख धर्म के अनुयायियों को सिख कहते हैं। इसे कभी–कभी सिक्ख भी लिखा जाता है। हिन्दू धर्म की रक्षा में तथा भारत की आजादी की लड़ाई में और भारत की आर्थिक प्रगति में सिखों का बहुत बड़ा योगदान है। सिखों का मुख्य धार्मिक ग्रन्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब है। आमतौर पर सिखों के 10 सतगुर माने जाते हैं, लेकिन सिखों के धार्मिक ग्रंथ में 6 गुरुओं सहित 30 भगतों की बानी है, जिनकी समान शिक्षाओं को सिख मार्ग पर चलने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके अलावा भी कई गुरूओं और उनके अनुयायियों द्वारा पुस्तकें व रचनाएं लिखने के प्रमाण मिले हैं। इन सबमें गुरुओं के दिखाए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गई है।

मुख्य शब्द : *सिखमत, सिखी, सतगुर, गुरमत, पोथी, समाणी, चिन्तनपरक, संगृहित, अकर्मण्यता, निश्चेष्टता, लिपिबद्ध, शयनवेला, नितनेम, उदात्तकारी, उदर्वोमुखी, कपकहना*

पृष्ठभूमि :

सिख धर्म एक एकेश्वरवादी धर्म है। 1469 ईस्वी में पंजाब में जन्मे नानक देव ने गुरमत को खोजा और गुरमत की सिख्याओं को देश देशांतर में खुद जा–जा कर फैलाया था। सिख उन्हें अपना पहला गुरु मानते हैं। गुरमत का प्रचार बाकी 9 गुरुओं ने किया। 10वें गुरु गोबिन्द सिंह जी ने ये प्रचार खालसा को सौंपा और ज्ञान गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं पर अमल करने का उपदेश दिया।

सिखों के प्रथम गुरु, गुरुनानक देव सिख धर्म के प्रवर्तक हैं। उन्होंने अपने समय के भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, जर्जर रूढियों और पाखण्डों को दूर करते हुए जन–साधारण को धर्म के ठेकेदारों, पण्डों, पीरों आदि के चंगुल से मुक्त किया। उन्होंने प्रेम, सेवा, परिश्रम, परोपकार और भाईचारे की दृढ़ नीव पर सिख धर्म की स्थापना की। ताज्जुब नहीं कि एक उदारवादी दृष्टिकोण से गुरुनानक देव ने सभी धर्मों की अच्छाइयों को समाहित किया। उनका मुख्य उपदेश था कि ईश्वर एक है, उसी ने सबको बनाया है। हिन्दू मुसलमान सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं और ईश्वर के लिए सभी समान हैं। उन्होंने यह भी बताया है कि ईश्वर सत्य है और मनुष्य को अच्छे कार्य करने चाहिए ताकि परमात्मा के दरबार में उसे लज्जित न होना पड़े। गुरुनानक देव जी ने अपने एक सबद में कहा है कि पण्डित पोथी (शास्त्र) पढ़ते हैं, किन्तु विचार को नहीं बूझते। दूसरों को उपदेश देते हैं, इससे उनका माया का व्यापार चलता है। उनकी कथनी झूठी है, वे संसार में भटकते रहते हैं। इन्हें सबद के सार का कोई ज्ञान नहीं है। ये पण्डित तो वाद–विवाद में ही पड़े रहते हैं।

पण्डित वाचहि पोथिआ न बूझहि बीचार।
आन को मती दे चलहि माइआ का बामारू।
कहनी झूठी जगु भवै रहणी सबहु सबदु सु सारू ।।6।।

गुरु अर्जुन देव तो यहाँ तक कहते हैं कि परमात्मा व्यापक है जैसे सभी वनस्पतियों में आग समायी हुई है एवं दूध में घी समाया हुआ है। इसी तरह परमात्मा की ज्योति ऊँच–नीच सभी में व्याप्त है परमात्मा घट–घट में व्याप्त है–

सगल वनस्पति महि बैसन्तरु सगल दूध महि घीआ।
ऊँच–नीच महि जोति समाणी, घटि–घटि माथउ जीआ।।

सिख धर्म के मुख्य ग्रंथ :

गुरु ग्रंथ साहिब :

सिख धर्म को मजबूत और मर्यादा सम्पन्न बनाने के लिए गुरु अर्जुन–देव ने आदि ग्रन्थ का संपादन करके एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक एवं शाश्वत कार्य किया। उन्होंने आदि ग्रन्थ में पाँच सिख गुरुओं के साथ 15 संतों एवं 14 रचनाकारों की रचनाओं को भी ससम्मान शामिल किया। इन पाँच गुरुओं के नाम हैं– गुरु नानक, गुरु अंगददेव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास और गुरु अर्जुनदेव। शेख फरीद, जयदेव, त्रिलोचन, सधना, नामदेव, वेणी, रामानंद, कबीर, रविदास, पीपा, सैठा, धन्ना, भीखन, परमानन्द और सूरदास 15 संतों की वाणी को आदिग्रन्थ में संग्रहीत करके गुरुजी ने अपनी उदार मानवतावादी दृष्टि का परिचय दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने हरिबंस, बल्हा, मथुरा, गयन्द, नल्ह, भल्ल, सल्ह भिक्खा, कीरत, भाई मरदाना, सुन्दरदास, राइ बलवंड एवं सत्ता डूम, कलसहार, जालप जैसे 14 रचनाकारों की रचनाओं को आदिग्रन्थ में स्थान देकर उन्हें उच्च स्थान प्रदान किया। यह अद्भुत कार्य करते समय गुरु अर्जुन देव के सामने धर्म जाति, क्षेत्र और भाषा की किसी सीमा ने अवरोध पैदा नहीं किया।

उन्हें मालूम था इन सभी गुरुओं, संतों एवं कवियों का सांस्कृतिक, वैचारिक एवं चिन्तनपरक आधार एक ही है। उल्लेखनीय है कि गुरु अर्जुनदेव ने जब आदिग्रन्थ का सम्पादन–कार्य 1604 ई. में पूर्ण किया था तब उसमें पहले पाँच गुरुओं की वाणियाँ थीं। इसके बाद गुरु गोविन्द सिंह ने अपने पिता गुरु तेग बहादुर की वाणी शामिल करके आदिग्रन्थ को अन्तिम रूप दिया। आदि–ग्रन्थ में 15 संतों के कुल 778 पद हैं। इनमें 541 कबीर के, 122 शेख फरीद

के, 60 नामदेव के और 40 संत रविदास के हैं। अन्य संतों के एक से चार पदों का आदि ग्रन्थ में स्थान दिया गया है। गौरतलब है कि आदि ग्रंथ में संग्रहीत ये रचनाएँ गत 400 वर्षों से अधिक समय के बिना किसी परिवर्तन के पूरी तरह सुरक्षित हैं। लेकिन अपने देहावसान के पूर्व गुरु गोविन्द सिंह ने सभी सिखों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए गुरु ग्रन्थ साहब और उनके सांसारिक दिशा–निर्देशन के लिए समूचे खालसा पंथ को 'गुरु पद' पर आसीन कर दिया। उस समय आदिग्रन्थ गुरु साहब के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

गुरु ग्रंथ या गुरु ग्रंथ साहिब या आदि गुरु दरबार या पोथी साहिब, गुरु अर्जुन देव द्वारा संगृहित एक धार्मिक ग्रंथ है जिसमे 36 भक्तों के आत्मिक जीवन के अनुभव दर्ज हैं। आदि ग्रंथ इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें आदि का ज्ञान भरपूर है। जप बनी के मुताबिक सच ही आदि है। इसका ज्ञान करवाने वाले ग्रंथ को आदि ग्रंथ कहते हैं। इसके हवाले स्वयं आदि ग्रंथ के भीतर हैं। हालांकि विदवान तबका कहता है क्योंकि ये ग्रंथ में गुरु तेग बहादुर जी की बनी नहीं थी इस लिए यह आदि ग्रंथ है और सतगुरु गोबिंद सिंह जी ने 9वें महले की बनी चढ़ाई इस लिए इस आदि ग्रंथ की जगह गुरु ग्रंथ कहा जाने लगा। भक्तो एवं सत्गुरुओं की वाणी पोथिओं के रूप में सतगुरु अर्जुन देव जी के समय मौजूद थी। भाई गुरदास जी ने यह ग्रंथ लिखा और सतगुरु अर्जुन देव जी दिशा निर्धारक बने। उन्होंने अपनी वाणी भी ग्रंथ में दर्ज की। यह ग्रंथ की कई नकले भी तैयार हुई।

आदिग्रन्थ सिख संप्रदाय का प्रमुख धर्मग्रन्थ है। इसे गुरु ग्रंथ साहिब भी कहते हैं। इसका संपादन सिख धर्म के पांचवें गुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी ने किया। गुरु ग्रन्थ साहिब जी का पहला प्रकाश 16 अगस्त 1604 को हरिमंदिर साहिब अमृतसर में हुआ। 1705 में दमदमा साहिब में दशमेश पिता गुरु गोविंद सिंह जी ने गुरु तेगबहादुर जी के 116 शब्द जोड़कर इसको पूर्ण किया, इसमे कुल 1430 पृष्ठ है। गुरुग्रन्थ साहिब में मात्र सिख गुरुओं के ही उपदेश नहीं है, वरन् 30 अन्य हिन्दू संत और अलंग धर्म के मुस्लिम भक्तों की वाणी भी सम्मिलित है। इसमे जहां जयदेवजी और परमानंदजी जैसे ब्राह्मण भक्तों की वाणी है, वहीं जाति–पांति के आत्महंता भेदभाव से ग्रस्त तत्कालीन हिंदु समाज में हेय समझे जाने वाली जातियों के प्रतिनिधि दिव्य आत्माओं जैसे कबीर, रविदास, नामदेव, सैण जी, सघना जी, छीवाजी, धन्ना की वाणी भी सम्मिलित है। पांचों वक्त नमाज पढ़ने में विश्वास रखने वाले शेख फरीद के श्लोक भी गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। अपनी भाषायी अभिव्यक्ति, दार्शनिकता, संदेश की दृष्टि से गुरु ग्रन्थ साहिब अद्वितीय है। इसकी भाषा की सरलता, सुबोधता, सटीकता जहां जनमानस को आकर्षित करती है। वहीं संगीत के सुरों व 31 रागों के प्रयोग ने आत्मविषयक गूढ़ आध्यात्मिक उपदेशों को भी मधुर व सारग्राही बना दिया है।

गुरु ग्रन्थ साहिब में उल्लेखित दार्शनिकता कर्मवाद को मान्यता देती है। गुरुवाणी के अनुसार व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार ही महत्व पाता है। समाज की मुख्य धारा से कटकर संन्यास में ईश्वर प्राप्ति का साधन ढूंढ रहे साधकों को गुरुग्रन्थ साहिब सबक देता है। हालांकि गुरु ग्रन्थ साहिब में आत्मनिरीक्षण, ध्यान का महत्व स्वीकारा गया है, मगर साधना के नाम पर परित्याग, अकर्मण्यता, निश्चेष्टता का गुरुवाणी विरोध करती है। गुरुवाणी के अनुसार ईश्वर को प्राप्त करने के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व से विमुख होकर जंगलों में भटकने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर हमारे हृदय में ही है, उसे अपने आन्तरिक हृदय में ही खोजने व अनुभव करने की आवश्यकता है। गुरुवाणी ब्रह्मज्ञान से उपजी आत्मिक शक्ति को लोककल्याण के लिए प्रयोग करने की प्रेरणा देती है। मधुर व्यवहार और विनम्र शब्दों के प्रयोग द्वारा हर हृदय को जीतने की सीख दी गई है।

सिखों का पवित्र धर्मग्रंथ जिसे उनके पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने सन् 1604 ई. में संगृहीत कराया था और जिसे सिख मतानुयायी गुरुग्रंथ साहिब जी भी कहते एवं गुरुवत् मानकर सम्मानित किया करते हैं। आदिग्रंथ के अंतर्गत सिखों के प्रथम पाँच गुरुओं के अतिरिक्त उनके नवें गुरु और 14 भगतों की बानियाँ आती हैं। ऐसा कोई संग्रह संभवतः गुरु नानकदेव के समय से ही तैयार किया जाने लगा था और गुरु अमरदास के पुत्र मोहन के यहाँ प्रथम चार गुरुओं के पत्रादि सुरक्षित भी रहे, जिन्हें पाँचवें गुरु ने उनसे लेकर पुनः क्रमबद्ध किया तथा उनमें अपनी ओर कुछ भगतों की भी बानियाँ सम्मिलित करके सबको भाई गुरुदास द्वारा गुरुमुखी में लिपिबद्ध करा दिया। भाई बन्नों ने फिर उसी की प्रतिलिपि कर उसमें कतिपय अन्य लोगों की भी रचनाएँ मिला देनी चाहीं जो पीछे स्वीकृत न कतिपय अन्य लोगों की भी रचनाएँ गोविंदसिंह ने उसका एक तीसरा बीड़ (संस्करण) तैयार कराया जिसमें, नवम गुरु की कृतियों के साथ–साथ, स्वयं उनके भी एक श्लोक को स्थान दिया गया। उसका यही रूप आज भी वर्तमान समझा जाता है। इसकी केवल एकाध अंतिम रचनाओं के विषय में ही यह कहना कठिन है कि वे कब और किस प्रकार जोड़ दी गई। ग्रंथ की प्रथम पाँच रचनाएँ क्रमशः (1) जपुनीसाणु (जपुजी), (2) सोदः महला 1, (3) सुणिबड़ा महला 1, (4) सो पुरखु, महला 4 तथा (5) सोहिला महला के नामों से प्रसिद्ध हैं और इनके अनंतर सिरीराग आदि 31 रागों में विभक्त पद आते हैं जिनमें पहले सिखगुरूओं की रचनाएँ उनके (महला1, महला2 आदि के) अनुसार संगृहीत हैं। इनके अनंतर भगतों के पद रखे गए हैं, किंतु बीच–बीच में कहीं–कहीं बारहमासा, थिंती, दिनरैणि, घोड़ीआं, सिद्ध गोष्ठी, करहले, बिरहडे, सुखमनी आदि जैसी कतिपय छोटी बड़ी विशिष्ट रचनाएँ भी जोड़ दी गई हैं जो साधारण लोकगीतों के काव्य प्रकार उदाहत करती हैं। उन रागानुसार क्रमबद्ध पदों के अनंतर श्लोक सहस कृती, गाथा महला 5, फुनहे महला 5, चउबोलें महला 5, सवैए सीमुख वाक्य महला 5 और मुदावणी महला 5 को स्थान मिला है और सभी के अंत में एक रागमाला

भी दे दी गई है। इन कृतियों के बीच–बीच में भी यदि कहीं कबीर एवं शेख फरीद के सलोक संगृहीत हैं तो अन्यत्र किन्हीं 11 पदों द्वारा निर्मित वे स्तुतियाँ दी गई हैं जो सिख गुरुओं की प्रशंसा में कही गई हैं और जिनकी संख्या भी कम नहीं है। ग्रंथ में संगृहीत रचनाएँ भाषावैविध्य के कारण कुछ विभिन्न लगती हुई भी, अधिकतर सामंजस्य एवं एकरूपता के ही उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। आदिग्रंथ को कभी–कभी गुरुबानी मात्र भी कह देते हैं, किंतु अपने भक्तों की दृष्टि में वह सदा शरीरी गुरूस्वरूप है। अतरू गुरू के समान उसे स्वच्छ रेशमी वस्त्रों में वेष्टित करके चांदनी के नीचे किसी ऊँची गद्दी पर पधराया जाता है, उसपर चंवर ढलते हैं, पुष्पादि चढ़ाते हैं, उसकी आरती उतारते हैं तथा उसके सामने नहा धोकर जाते और श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं। कभी–कभी उसकी शोभायात्रा भी निकाली जाती है तथा सदा उसके अनुसार चलने का प्रयत्न किया जाता है। ग्रंथ का कभी साप्ताहिक तथा कभी अखंड पाठ करते हैं और उसकी पंक्तियों का कुछ उच्चारण उस समय भी किया करते हैं जब कभी बालकों का नामकरण किया जाता है, उसे दीक्षा दी जाती है तथा विवाहदि के मंगलोत्सव आते हैं अथवा शवसंस्कार किए जाते हैं। विशिष्ट छोटी बड़ी रचनाओं के पाठ के लिए प्रातः काल, सायंकाल, शयनवेला जैसे उपयुक्त समय निश्चित हैं ओर यद्यपि प्रमुख संगृहीत रचनाओं के विषय प्रधानतः दार्शनिक सिद्धांत, आध्यात्मिक साधना एवं स्तुतिगान से ही संबंध रखते जान पड़ते हैं, इसमें संदेह नहीं कि आदि ग्रंथ द्वारा सिखों का पूरा धार्मिक जीवन प्रभावित है।

दसम ग्रंथ :

दसम ग्रन्थ, सिखों का धर्मग्रन्थ है जो सतगुर गोबिंद सिंह जी की पवित्र वाणी एवं रचनाओं का संग्रह है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने जीवनकाल में अनेक रचनाएँ की जिनकी छोटी छोटी पोथियाँ बना दीं। उन की मौत के बाद उन की धर्म पत्नी माता सुन्दरी की आज्ञा से भाई मनी सिंह खालसा और अन्य खालसा भाइयों ने गुरु गोबिंद सिंह जी की सारी रचनाओं को इकठा किया और एक जिल्द में चढ़ा दिया जिसे आज दसम ग्रन्थ कहा जाता है। सीधे शब्दों में कहा जाये तो गुरु गोबिंद सिंह जी ने रचना की और खालसे ने सम्पादना की। दसम ग्रन्थ का सत्कार सारी सिख कौम करती है।

दसम ग्रंथ की वानियाँ जैसे की जाप साहिब, तव परसाद सवैये और चोपाई साहिब सिखों के रोजाना सजदा, नितनेम, का हिस्सा है और यह वानियाँ खंडे बाटे की पहोल, जिस को आम भाषा में अमृत छकना कहते हैं, को बनाते वक्त पढ़ी जाती हैं। तखत हजूर साहिब, तखत पटना साहिब और निहंग सिंह के गुरुद्वारों में दसम ग्रन्थ का गुरु ग्रन्थ साहिब के साथ परकाश होता हैं और रोज हुकमनामे भी लिया जाता है।

रहरास साहिब :

रहरास साहिब (अथवा रहिरास, रेहरास) सिखों द्वारा शाम के समय की जाने वाली प्रार्थना है। इस प्रार्थना को पाँच गुरुओं गुरु नानक देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जन देव जी और गुरु गोविंद सिंह जी ने बनाया है। मूल प्रार्थना जिसे सिखों के पहले गुरु, नानक देव जी ने लिखा व बोला था में अन्य गुरुओं ने अपनी पंक्तियाँ जोडी। हर पंक्ति ईश्वर के विभिन्न विचारों व पहलुओं पर प्रकाश डालती है, व सर्वशक्तिमान की आराधना करती है। रहिरास दिन के अंत में गायी जाती है। इसका उद्देश्य दिन के कार्य खत्म करने के बाद गायक में एक नई ऊर्जा भरने के लिए होती है। इसका उद्देश्य ईश्वर की प्रार्थना कर के शारीरिक कमजोरी, थकान, गरीबी, जमीन–जायदाद, निराशा, असफलता जैसे विचारों से छुटकारा पाकर स्वयँ में एक नई ऊर्जा का संचार करना होता है। कहते हैं कि इसमें बैयन्टी चौपाई गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा गायी हुई उनकी व्यक्तिगत प्रार्थना है जो प्रकृति के जल तत्व से संबंधित है।

जपजी साहिब :

आदि गुरु श्री गुरुग्रंथ साहब की मूलवाणी जपुजी जगतगुरु श्री गुरुनानक देवजी द्वारा जनकल्याण हेतु उच्चारित की गई अमृतमयी वाणी है। जपुजी एक विशुद्ध एक सूत्रमयी दार्शनिक वाणी है उसमें महत्वपूर्ण दार्शनिक सत्यों को सुंदर अर्थपूर्ण और संक्षिप्त भाषा में काव्यात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है। इसमें ब्रह्मज्ञान का अलौकिक ज्ञान प्रकाश है। इसका दिव्य दर्शन मानव जीवन का चिंतन है।

इस वाणी में धर्म के सत्य, शाश्वत मूल्यों को बही मनोहारी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अतः महान गुरु की इस महान कृति की व्याख्या करना तो दूर इसे समझना भी आसान नहीं है। लकिन जो इसमें प्रयुक्त भाषाओं को जानते हैं उनके लिए इसका चिंतन, मनन करना उदात्तकारी एवं उदर्वोमुखी है। यह एक पहली धार्मिक और रहस्यवादी रचना है और आध्यात्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में इसका अत्यधिक महत्व महान है।

गुरु नानक की जन्म साखियों में इस बात का उल्लेख है कि जब गुरुजी सुलतानपुर में रहते थे, तो वे रोजाना निकटवर्ती वैई नदी में स्नान करने के लिए जाया करते थे। जब वे 27 वर्ष के थे, तब एक दिन प्रातःकाल वे नदी में स्नान करने के लिए गए और तीन दिन तक नदी में समाधिस्थ रहे।

वृतांत में कहा है कि इस समय गुरुजी को ईश्वर का साक्षात्कार हुआ था। उन पर ईश्वर की कृपा हुई थी और देवी अनुकम्पा के प्रतीक रूप में ईश्वर ने गुरुजी को एक अमृत का प्याला प्रदान किया थ। वृतांतों में इस बात की साक्षी मौजूद है कि इस अलौकिक अनुभव की प्रेरणा से गुरुजी ने मूलमंत्र का उच्चारण किया था, जिससे जपुजी साहिब का आरंभ होता है।

जपुजी का प्रारंभिक शब्द एक ओमकारी बीज मंत्र है जैसे उपनिषदों और गीता में ओम शब्द बीज मंत्र है।

एक ओंकार सतिनाम, करता पुरखु निरभऊ,
निरबैर, अकाल मूरति, अजूनी, सैभं गुर प्रसादि

मूल मंत्र है, जिसमें प्रभु के गुण नाम कथन किए गए हैं।

समस्त जपुजी को मोटे तौर पर चार भागों में विभक्त किया गया है–

1. पहले सात पद,
2. अगले बीस पद,
3. इसके बाद के चार पद,
4. और शेष सात पद।

पहले सात में अध्यात्म की खोजी जीवात्मा की समस्या को समझाया गया है। अगला भाग पाठकों को उत्तरोत्तर साधन पथ की ओर अग्रसर करता जाता है, जब तक कि जीवात्मा को महान सत्य का साक्षात्कार नहीं हो जाता।

तीसरे भाग में ऐसे व्यक्ति के मानसिक रुझानों और दृष्टि का वर्णन किया है, जिसने कि अध्यात्म का आस्वाद चख लिया हो। अंतिम भाग में समस्त साधना का सार प्रस्तुत किया गया है, जो स्वयं में अत्यधिक मूल्यवान है, क्योंकि इस भाग में सत्य और शाश्वत सत्य, साधना पथ की ओर, उन्मुख मननशील आत्मा का आध्यात्मिक विकास के चरणों का प्रत्यक्ष वर्णन किया गया है।

जपुजी श्री गुरुनानकजी की आध्यात्मिक वाणी के साथ ही अद्वितीय साहित्यिक रचना भी है। इसकी प्रश्नोत्तरी शैली पाठक के भावों पर अमिट छाप छोती है। इसमें स्वयं गुरुजी ने जिज्ञासु के मन के प्रश्नों या आशंकाओं का उल्लेख करके उनका बतर्कपूर्ण ढंग से समाधान किया है।

इसमें संदेह नहीं कि जपुजी एक दार्शनिक और विचार प्रधान कृति है और इसकी रचना गुरुजी की अन्य वाणी की भाँति रागों के अनुसार नहीं की गई है। किंतु फिर भी इसमें अनेक छंदों का प्रयोग किया गया है। इसमें मुख्य छंद, दोहा, चौपाई तथा नाटक आदि हैं। जपुजी के आरंभ और अंत में एक श्लोक है।

जपुजी के पहले चरण की पहली तीन पंक्तियों का तुकांत एक है और उसमें आगे तीन पंक्तियों का अलग। एक ओंकार...प्रसादि स्तुति है। आदि सच... ही भी सच भी मंत्र स्वरूप वार्तकमयी स्तुति है। वार की भाँति पंक्तियों का तुकांत भी मध्य से ही मिलता है। जैसे

हुकमी उत्तम नीचु हुकमि लिखित दुखसुख पाई अहि।
इकना हुकमी बक्शीस इकि हुकमी सदा भवाई अहि।।

मध्य अनुरास का एक उदाहरण–

सालाही सालाही एती सुरति न पाइया।
नदिआ अते वाह पवहि समुंदि न जाणी अहि।।

इसी तरह कहा जा सकता है कि पौके रूप में विचार अभिव्यक्त करने का प्रारंभ गुरुनानक ने किया। कुछ शब्दों में बार–बार दोहराने से भी संगीतमयी लय उत्पन्न हो गई है। जैसे– तीसरे चरण में गावे को का बार–बार दोहराना सूत्र शैली में शब्दों का प्रयोग बहुत संक्षिप्त रूप से किया गया है। इस संक्षिप्तता तथा संयम के लिए रूपक का प्रयोग अक्सर होता है। जपुजी में रूपक का अधिकतर प्रयोग किया गया है। जैसे–

पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु।
दिवस राति दुई दाई दाइआ खेले सगलु जगतु।।

जपुजी के अंतिम चरण में सुनार की दुकान का रूपक मनुष्य के सदाचारी जीवन तथा आत्म प्रगति के साधनों को प्रकट करता है। इसी तरह शरीर को कपकहना जिसमें शरीर का नाश तथा फिर नवरूप धारण करने की प्रक्रिया जान पती है। आपे बीजे आपे ही खाहु किसानी जीवन के क्रियाकर्म सिद्धांत को स्पष्ट करता है।

मति विचि रत्न जवाहर माणिक में मनुष्य के गुण आदि को रत्न, जवाहर तथा मोती कहा है। असंख सूर मुह भरव सार कहकर आत्मिक योद्धा की विवशता का दर्शन दिया है जो धर्म क्षेत्र में कुरीतियों का सामना करते हुए उनके वार को झेलता रहता है। संतोख थापि रखिया जिनि सूति कहकर संसार के नियमबद्ध होने का भेद समझा दिया है। जैसे– सूत्र में सब मनके पिरोये रहते हैं, इसी तरह संतोख नियम रूपी धागे में सारा जगत पिरोया हुआ है। बीसवीं पौमें बुद्धि की शुद्धता के लिए बहुत अलंकृत वाणी में मन को सृष्टि के दर्शन को समझाया गया है।

गुरुनानकजी लोकगुरु थे। इसीलिए उन्होंने ईश्वरीय संदेश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए जपुजी में लोकभाषा का ही सर्वाधिक उपयोग किया। जपुजी की भाषा उस समय की संतभाषा कही जा सकती है, जिसमें ब्रज भाषा का मिश्रण है। जपुजी के रचनाकाल में संस्कृत के शब्दों को पंजाबी या तद्भव रूप में लिखा जाता था।

जपुजी में कुछ शब्द अरबी–फारसी के तत्सम रूप में भी हैं। जैसे–पीर, परो, दरबार, कुदरत, हुक्मादि। अधिकतर तद्भव रूप ही लिए गए हैं, जैसे हदूरी (हजूरी), नंदरी (नजरी), कागद (कागज) आदि। इसके अतिरिक्त योगियों की विशेष प्रकार की शब्दावली पंजाबी रूप में पौ 28 और 29 में मिलती है। जपुजी गुरुवाणी में है जो कि गुरुनानक बोलते थे, यद्यपि अक्षरों का आविष्कार उन्होंने नहीं किया था।

अपनी विशिष्ट भाषा और सशक्त शैली के माध्यम से गुरुजी ने जपुजी में सर्वोच्च सत्य और उसकी सनातन खोज संबंधी उच्च बौद्धिक एवं अमूर्त विचारों को स्पष्ट एवं सशक्त रूप में अभिव्यक्त किया है। विनोबाजी के कथनानुसार ऐसा करना गुरुनानक का आदर्श था। जिव होवे फरमाणु के भाव की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा है मुझे लगता कि यहाँ संस्कृत और अरबी दोनों अर्थ लेकर शब्दों की रचना की है। आखिर गुरुजी हिंदू और मुसलमानों दोनों को जोचाहते थे, सगल जस्माती करना चाहते थे।

अन्य ग्रन्थ :

सर्बलोह ग्रन्थ और भाई गुरदास की वारें शंका ग्रस्त रचनाए हैं। हालांकि खालसा महिमा सर्बलोह ग्रन्थ में सुसज्जित है जो सतगुरु गोबिंद सिंह की प्रमाणित रचना है, बाकी सर्बलोह ग्रन्थ में कर्म कांड, व्यक्ति पूजा इत्यादि विशेष मौजूद हैं जो सिखों के बुनियादी उसूलों के खिलाफ हैं। भाई गुरदास की वारों में मूर्ति पूजा, कर्म सिद्धांत आदिक गुरमत विरुद्ध शब्द दर्ज हैं।

सिख धर्म का इतिहास के लिए कोई भी इतिहासिक स्रोत को पूरी तरंह से पुख्ता नहीं माना जाता। श्री गुर सोभा ही

ऐसा ग्रन्थ माना गया है जो गोबिंद सिंह के निकटवर्ती सिख द्वारा लिखा गया है लेकिन इसमें तारीखें नहीं दी गई हैं। सिखों के और भी इतिहासक ग्रन्थ हैं जैसे कि श्री गुर परताप सूरज ग्रन्थ, गुर्बिलास पातशाही 10, श्री गुर सोभा, मन्हीमा परकाश एवं पंथ परकाश, जनमसखियाँ इत्यादि। श्री गुर परताप सूरज ग्रन्थ की व्याख्या गुरद्वारों में होती है। कभी गुर्बिलास पातशाही 10 की होती थी। 1750 के बाद ज्यादातर इतिहास लिखे गए हैं। इतिहास लिखने वाले विद्वान ज्यादातर सनातनी थे जिस कारण कुछ ऐतिहासिक पुस्तकों में सतगुरु एवं भक्त चमत्कारी दिखाए हैं जोकि गुरमत फलसफे के मुताबिक ठीक नहीं है। गुरु नानक का हवा में उडना, मगरमच्छ की सवारी करना इत्यादि घटनाएं जम्सखियों और गुर्बिलास में सुसजित हैं और बाद के इतिहासकारों ने इन्ही बातों के ऊपर मसाला लगा कर लिखा हुआ है। किसी सतगुर एवं भक्त ने अपना संसारी इतिहास नहीं लिखा। सतगुरु गोबिंद सिंह ने भी जितना लिखा है वह संक्षेप और टूक परमाण जितना लिखा है। सिख धर्म इतिहास को इतना महत्व नहीं देता, जो इतिहास गुरबानी समझने के काम आए उतना ही सिख के लिए जरूरी है। आज सिख इतिहास का शुद्धीकरण करने में लगे हैं। और पुरातन ग्रन्थ की मदद के साथ साथ गुरमत को ध्यान में रखते हुए इतिहास लिख रहे हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. आदिग्रन्थ, पृ. 55
2. आदिग्रन्थ, पृ. 617
3. गोपाल सिंह, सिक्ख जनों का इतिहास, दिल्ली, संस्करण–1995
4. जे.एस. ग्रेवाल, पंजाब के सिक्ख, दिल्ली, संस्करण–1994
5. साँचा : सन्दूक सिख संप्रदाय
6. जे.डी. कनिंघम, सिक्खों का इतिहास, दिल्ली, संस्करण–1955
7. सुरजीत सिंह, गुरुनानक का जीवन, चण्डीगढ़, संस्करण–1969
8. हरबंस सिंह, सिक्खों की धरोहर, दिल्ली, संस्करण–1983
9. अमृतलाल पाल, बॉरकर अर्जुन देव, अमृतसर, संस्करण–1992
10. गुरचरण कौर जग्गी, गुरु अर्जुन देव, पटियाला, संस्करण–1988
11. फौजी सिंह, पंजाब : इतिहास, पटियाला, 1988
12. महेन्द्र कौर गिल, गुरु अर्जुन देव जीवन बी वाणी, दिल्ली,
संस्करण–1976
13. धर्मवीर, पंजाब का इतिहास, इलाहबाद, संस्करण–1950
14. साहिब सिंह, जीवन वृतांत, गुरुनानक देव, पंजाबी अमृतसर,
संस्करण–1990,